

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे राल्मीकीये आदिकार्ये सुन्दरकाण्डे

॥ द्वादशः सर्गः ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ द्वादशः सर्गः ॥

सीतामरणाशङ्कया हनुमतः शैथिल्यं पुनरुत्साहमवलम्ब्य स्थानान्तरेषु

तेन तस्या अन्वेषणं कुत्रापि तामनराप्य तस्य पुनश्चित्ता च

स तस्य मध्ये भवनस्य संस्थितो

लतागृहांश्चित्रगृहान् निशागृहान्।

जगाम सीतां प्रतिदर्शनोत्सुको

न चैव तां पश्यति चारुदर्शनाम् ॥ 5.12.1 ॥

स चिन्तयामास ततो महाकपिः

प्रियामपश्यन् रघुनन्दनस्य ताम्।

क्षुरं न सीता ध्रियते यथा न मे

रिचिन्त्रतो दर्शनमेति मैथिली ॥ 5.12.2 ॥

सा रामस्यानां प्रररेण जानकी

स्वशीलसंरक्षणतत्परा सती।

अनेन नूनं प्रति दुष्टकर्मणा

हता भवेदार्यपथे परे स्थिता ॥ 5.12.3 ॥

रिरूपरूपा रिकृता रिरर्चसो

महानना दीर्घरिरूपदर्शनाः।

समीक्ष्य ता रामसराजयोषितो

भयाद् रिनष्टा जनकेश्वरात्तुजा ॥ 5.12.4 ॥

सीतामदृष्ट्वा ह्यनराप्य पौरुषं

रिहत्य कालं सह बानरैश्चिरम्।

ন মেহস্তি সুগ্রীরসমীপগা গতিঃ

সুতীক্ষ্ণদণ্ডো বলরাংশ্চ রানরঃ ॥ 5.12.5 ॥

দৃষ্টমন্তঃপুরং সর্বাং দৃষ্টা রারণযোষিতঃ।

ন সীতা দৃশ্যতে সাধ্বী বৃথা জাতো মম শ্রমঃ ॥ 5.12.6 ॥

কিং নু মাং রানরাঃ সর্বে গতং রক্ষ্যন্তি সঙ্গতাঃ।

গংরা তত্র ৎরয়া রীর কিং কৃতং তদ্ বদস্ব নঃ ॥ 5.12.7 ॥

অদৃষ্টরা কিং প্ররক্ষ্যামি তামহং জনকাত্মজাম্।

ধ্বং প্রায়মুপাসিষ্যে কালস্য র্যতিরর্তনে ॥ 5.12.8 ॥

কিং রা রক্ষ্যতি বৃদ্ধশ্চ জাম্বরানঙ্গদশ্চ সঃ।

গতং পারং সমুদ্রস্য রানরাশ্চ সমাগতাঃ ॥ 5.12.9 ॥

অনির্বেদঃ শ্রিয়ো মূলমনির্বেদঃ পরং সুখম্।

ভূয়স্তত্র রিচেষ্যামি ন যত্র রিচযঃ কৃতঃ ॥ 5.12.10 ॥

অনির্বেদো হি সততং সর্বার্থেষু প্রবর্তকঃ।

করোতি সফলং জন্তোঃ কর্ম যচ্চ করোতি সঃ ॥ 5.12.11 ॥

তস্মাদনির্বেদকরং যত্ত্বং চেষ্টেহহমুক্তমম্।

অদৃষ্টাংশ্চ রিচেষ্যামি দেশান্ রারণপালিতান্ ॥ 5.12.12 ॥

আপানশালা রিচিতাস্তথা পুষ্পগৃহাণি চ।

চিত্রশালাশ্চ রিচিতা ভূযঃ ক্রীড়াগৃহাণি চ ॥ 5.12.13 ॥

নিষ্কুটান্তররথ্যাশ্চ রিমানানি চ সর্বাশঃ।

ইতি সঞ্চিন্ত্য ভূয়োহপি রিচেতুমুপচক্রমে ॥ 5.12.14 ॥

ভূমীগৃহাংশ্চৈত্যগৃহান্ গৃহাতিগৃহকানপি।

উৎপতন্ নিপতংশ্চাপি তিষ্ঠন্ গচ্ছন্ পুনঃ ক্লচিৎ ॥ 5.12.15 ॥

অপবৃৎশ্চ দ্বারাণি কপাটান্যরঘট্টযন্।  
প্রিশন্ নিষ্পতংশ্চাপি প্রপতনুৎপতন্নির ॥ 5.12.16 ॥

সর্ষমপ্যরকাশং স রিচচার মহাকপিঃ।  
চতুরঙ্গুলমাত্রোহপি নারকাশঃ স রিদ্যতে।  
রারণান্তঃপুরে তস্মিন্ যং কপির্ন জগাম সঃ ॥ 5.12.17 ॥

প্রাকারান্তররীথ্যশ্চ রেদিকাশ্চৈত্যসংশ্রযাঃ।  
শ্রভ্রাশ্চ পুঙ্করিণ্যশ্চ সর্ষং তেনারলোকিতম্ ॥ 5.12.18 ॥

রাক্ষস্যা রিরিধাকারা রিরূপা রিকৃতাস্তথা।  
দৃষ্টা হনুমতা তত্র ন তু সা জনকাত্মজা ॥ 5.12.19 ॥

রূপেণাপ্রতিমা লোকে পরা রিদ্যাধরস্ত্রিযঃ।  
দৃষ্টা হনুমতা তত্র ন তু রাঘরনন্দিনী ॥ 5.12.20 ॥

নাগকন্যা ররারোহাঃ পূর্ণচন্দ্রনিভাননাঃ।  
দৃষ্টা হনুমতা তত্র ন তু সা জনকাত্মজা ॥ 5.12.21 ॥

প্রমথ্য রাক্ষসেন্দ্রেণ নাগকন্যা বলাদ্ধৃতাঃ।  
দৃষ্টা হনুমতা তত্র ন সা জনকনন্দিনী ॥ 5.12.22 ॥

সোহপশ্যংস্তাং মহাবাহুঃ পশ্যংশ্চান্যা ররস্ত্রিযঃ।  
রিষসাদ মহাবাহুর্হনুমান্ মারুতাত্মজঃ ॥ 5.12.23 ॥

উদ্যোগং রানরেন্দ্রাণাং প্লরনং সাগরস্য চ।  
র্যর্থং রীক্ষ্যানিলসুতশ্চিন্তাং পুনরুপাগতঃ ॥ 5.12.24 ॥

অরতীর্ষ রিমানাচ্চ হনুমান্ মারুতাত্মজঃ।  
চিন্তামুপজগামাথ শোকোপহতচেতনঃ ॥ 5.12.25 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে রাল্লীকীষে আদিকাৰ্যে সুন্দরকাণ্ডে দ্বাদশঃ সর্গঃ ॥